मिथिला दर्शन

'मिथिला दर्शन' क प्रकाशन १९५३ ई०मे कलकत्तासँ आरम्भ भेल। एकर सम्पादक छलाह प्रबोध नारायण सिंह ओ हुनक विदुषी पत्नी डॉ० अणिमा सिंह। किछु काल धरि एकर संपादिकाक पद श्रीमति इलारानी सिंह सेहो ग्रहण कयलनि। 'मिथिला दर्शन'क उद्देश्य छल मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक प्रति उचित अधिकारक हेतु संघर्ष करब। अतः एहिमे तेहने लेख, कविता प्रभृति अधिक संख्यामे प्रकाशित होइत छल तथापि नव रूपक साहित्य मुख्यतः कथा ओ कविताक अभिवृद्धिमे ई पत्रिका बड़ सहायक सिद्ध भेल। सिनेमाक समाजक ध्यान आकर्षित करब सजग पत्रकारक दायित्व होइत छल परन्तु वैदेही जकाँ ई पत्रिका पालन करैत छल। 'वैदेही' तथा 'दर्शन' एककालमे प्रकाशित होइत छल। वैदेही यदि साहित्यिक अभिवृद्धिकेँ प्रमुखता दैत छल तँ दर्शन राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक आदि समस्याकेँ प्रमुखता दैत छल। यद्यपि वैदेही जकाँ विशेषांक-प्रकाशन सुनियोजित ढंगेँ नहि छल, तथापि समय समय पर इतिहास, आलोचना, निबन्ध आदिक प्रकाशन एहिमे होइत रहैत छल। कथा आ नाटकक रंगमंचनक हेतु ई विशेष सतर्क रहैत छल। कोनो स्वतन्त्र नाटक एहि माध्यमसँ प्रकाशित भऽ नहि स्पष्ट होइत अछि, परन्तु विभिन्न लेखकक एकांकीक प्रकाशन समय-समय पर होइत छल। ओहि कालमे विभिन्न लेखक लोकनिसँ किछु नाटक लिखाओल गेल तथा कलकत्तामे एक रंगमंच तैयार कराओल गेल। एहि प्रकारेँ नाटक तथा रंगमंचक विकासमे 'दर्शन' समाजक प्रेरणा स्रोत बनल। साहित्य एकेडमीमे मैथिलीकेँ मान्यता दियएबाक हेतु 'दर्शन' पूर्ण तत्पर छल। अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ परिगृहीत करबाक हेतु चलाओल आन्दोलनमे सेहो ई सदैव तत्पर छल।

[illegible]

मिथिला दर्शनक माध्यमसँ बहुतो साहित्यकारक जन्म भेल। रमानाथ झा, कवि मधुप प्रोफेसर नाथ झा, डॉ लक्ष्मणझा हरिमोहन झा, सुरेन्द्र 'सुमन' शैलेन्द्र मोहन झा, शेखर आर रमण, जयकान्त मिश्र, रामदेव झा, काचीनाथ झा 'किरण', राजमोहन झा, मायानन्द मिश्र, परमेश्वर मिश्र आदि प्रमुख साहित्यकार लोकनि एकरो माध्यमसँ अपन रचनाक श्री गणेश कयलनि।

1975 ई०मे दर्शनक दू फाँक भेल पहिल 'मैथिली दर्शन' आ दोसर 'मिथिला दर्शन'। आ एकर अपकर्षक क्रम प्रारम्भ भ' गेल। मुदा ई मैथिली जन-मानसमे जाहिरूपेँ चेतनाक भावना अपन रचना द्वारा कएल से प्रशंसनीय आ चिन्तनीय अछि।